संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

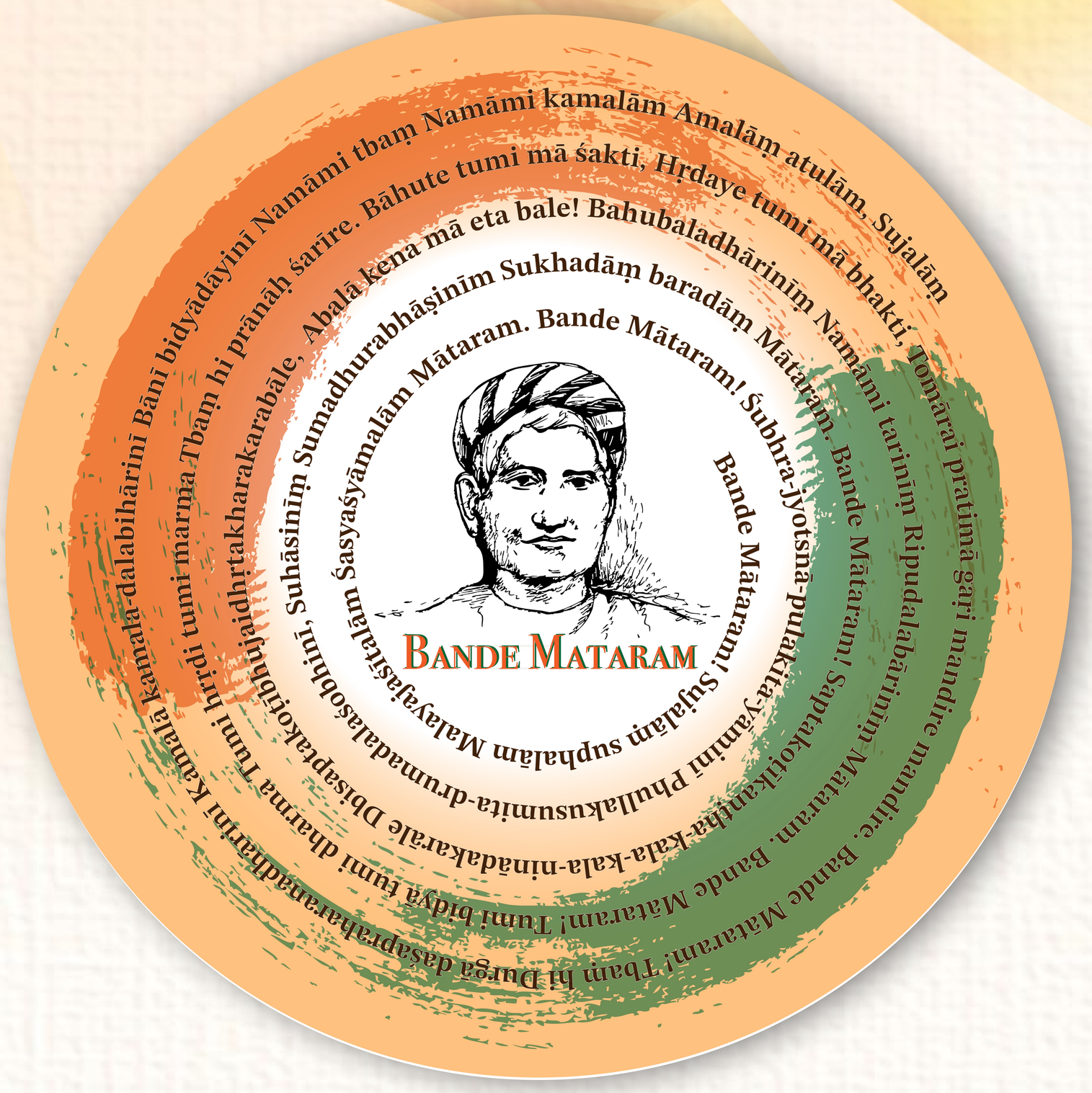

वंदे मातरम्

भारत के स्वतंत्रता संग्राम का आह्वान

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

वह गीत जिसने देश का भाग्य बदल दिया, उसकी रचना 1875 में अक्षय नवमी के दिन हुई थी

'अक्षय' शब्द का अर्थ है 'वह जिसका कभी क्षय न हो', यह शाश्वत समृद्धि और विकास का प्रतीक है।

अक्षय नवमी कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को मनाई जाती है, जो ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार आमतौर पर अक्टूबर या नवंबर में पड़ती है।

पश्चिम बंगाल में यह दिन जगद्धात्री पूजा से जुड़ा है, जिसमें देवी जगद्धात्री को जगतजननी, पालनहार और रक्षक के रूप में माना जाता है। देवी जगद्धात्री को माँ दुर्गा के ही दूसरे अवतार के रूप में पूजा जाता है।

साहित्यिक स्रोतों से पता चलता है कि वंदे मातरम् 150 साल पहले अक्षय नवमी के दिन लिखा गया था, जो वर्ष 1875 में 7 नवंबर को पड़ी थी।



संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

माना जाता है कि बंकिम चंद्र ने इसे पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद के लालगोला में लिखा था

एक बार बंकिमचंद्र पालकी में बेरहामपुर के बैरक स्क्वायर से गुजर रहे थे। यह 1873 के दिसंबर की एक शाम थी और कुछ अंग्रेज सैनिक उस मैदान पर क्रिकेट मैच खेल रहे थे।



एक अंग्रेज अधिकारी, लेफ्टिनेंट कर्नल डफिन ने बंकिमचंद्र की पालकी रोकी और रास्ता बदलने की माँग की ताकि वो मैदान पार करके ना जाए।

जब उन्होंने मना किया, तो दोनों पक्षों में बहस हुई, अधिकारी ने उन्हें नीचे खींच लिया और मुक्का मारा। उस समय बंकिमचंद्र मुर्शिदाबाद जिले में डिप्टी कलेक्टर के पद पर कार्यरत थे।

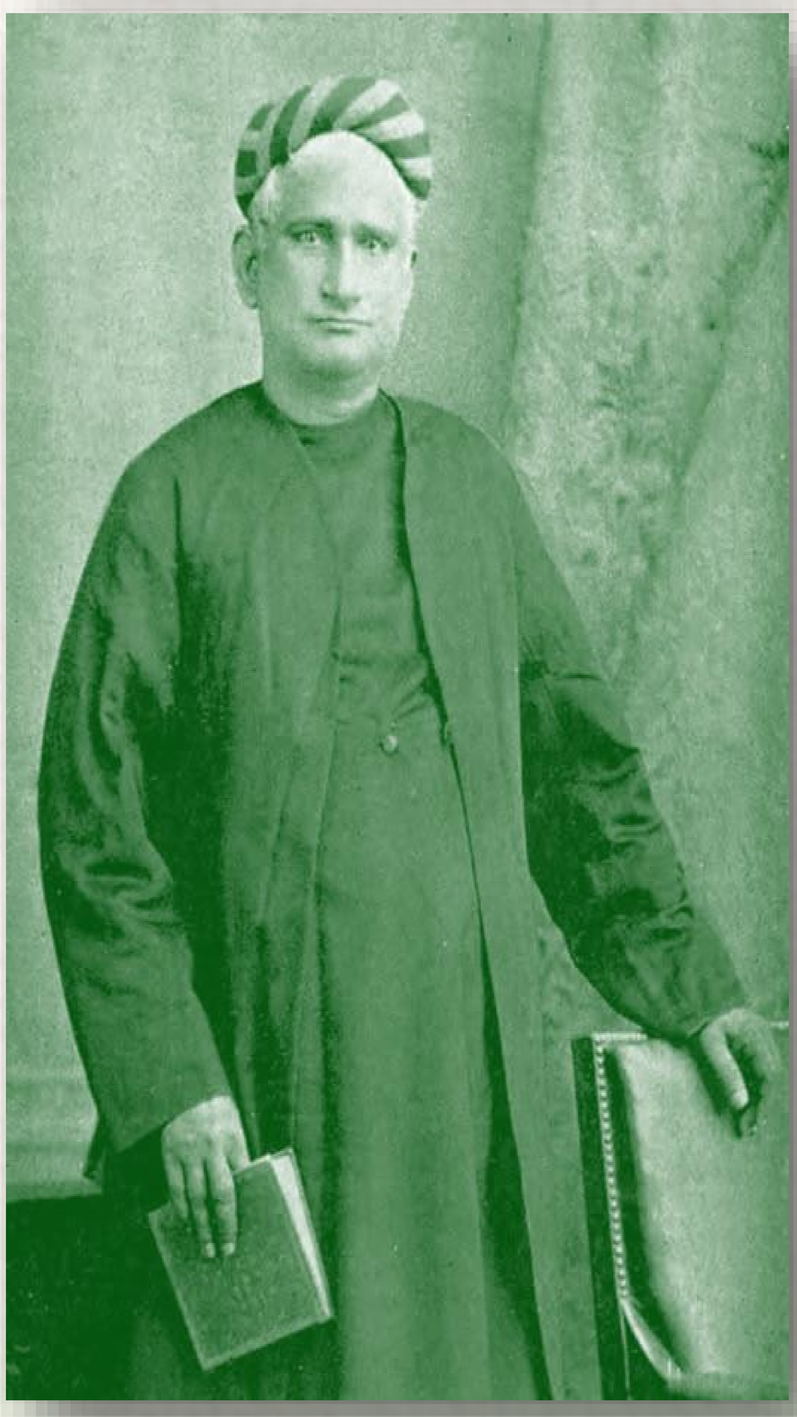

बंकिम बाबू ने उस अधिकारी के खिलाफ मुकदमा दायर किया। गवाहों में लालगोला के स्थानीय ज़मींदार, राजा जोगींद्र नारायण राय और अन्य लोग शामिल थे।

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

1874 में अदालती सुनवाई के दौरान अंग्रेज अधिकारी ने बंकिमचंद्र से सार्वजनिक रूप से माफ़ी मांगी

कर्नल डफिन बरहामपुर छावनी के कमांडिंग ऑफिसर थे। उनकी ये सार्वजनिक माफ़ी हर जगह चर्चा का विषय बन गई।

ऐसी चर्चाएँ होने लगीं कि बंकिमचंद्र की जान को ख़तरा हो सकता है। किसी अनहोनी की आशंका से, राजा जोगींद्र नारायण राय ने बंकिमचंद्र को कुछ समय के लिए लालगोला में रहने के लिए आमंत्रित किया। बंकिमचंद्र ने छुट्टी ली और यह निमंत्रण स्वीकार कर लिया।



इस अपमान और उससे उत्पन्न संघर्ष ने औपनिवेशिक अन्याय और संकटग्रस्त मातृभूमि के प्रति बंकिमचंद्र के नज़रिये को गहराई से प्रभावित किया। कुछ विद्वानों का मानना है कि यही घटना उनके वंदे मातरम् लेखन के लिए उत्प्रेरक बनी।

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

लालगोला के शाही महल के चारों ओर ईश्वर भक्ति और धर्मनिष्ठा के प्रतीक अनेक मंदिर स्थापित थे



काली मंदिर में 'बेड़ियों में जकड़ी माँ' की उस छवि ने बंकिमचंद्र के मन में भारत की ब्रिटिश दासता का बोध जगाया। उन्होंने इस रूपक को अपनी रचना में रूपांतरित किया, जहाँ वह जकड़ी हुई माँ स्वतंत्रता की प्रबल आकांक्षा से ओतप्रोत मातृभूमि का प्रतीक बन गई।



संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

वंदे मातरम् पहली बार बंगदर्शन पत्रिका में धारावाहिक उपन्यास 'आनंदमठ' के हिस्से के रूप में प्रकाशित हुआ

बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने वंदे मातरम् को संस्कृतनिष्ठ बंगाली में रचा था।

यह गीत उनके उपन्यास 'आनंद मठ' का एक अंश था, जो सबसे पहले धारावाहिक रूप में बंगदर्शन में प्रकाशित हुआ था। बंगदर्शन बंकिम चंद्र द्वारा संपादित एक बांग्ला साहित्यिक पत्रिका थी।

यह उपन्यास 1770 के दशक में हुए संन्यासी विद्रोह पर आधारित था। आनंद मठ बाद में 1882 में एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुआ।

১২৮৭] আনন্দ মঠ ৫৫৫

সেন। সে স্থিরমূর্ত্তি, বীরপ্রকৃতি সন্ন্যাসী আর নাই; সে রণনিপুণ বীরমূর্ত্তি—সৈন্যাধ্যক্ষের যুদ্ধব্যাকুল মূর্ত্তি আর নাই—এখনই যে গর্ব্বিতভাবে মহেন্দ্রকে তিরস্কার করিতেছিলেন সে মূর্ত্তি আর নাই। ইহা জ্যোৎস্নাময়ী, শান্তিশালিনী, পৃথিবীর প্রান্তরকাননবনস্থলীময় শোভা দেখিয়া তাঁহার চিত্তের বিশেষ স্ফূর্ত্তি হইল—সমুদ্র যেন চন্দ্রোদয়ে হাসিল। ভবানন্দ হাস্যমুখ, বাঙ্ময়, প্রিয়সম্ভাষী হইলেন। কথাবার্ত্তার জন্য বড় ব্যগ্র। ভবানন্দ কথোপকথনের অনেক উদ্যম করিলেন, কিন্তু মহেন্দ্র কথা কহিল না। তখন ভবানন্দ নিরুপায় হইয়া আপন মনে গীত আরম্ভ করিলেন,—

"বন্দে মাতরং
সুজলাং সুফলাং, মলয়জশীতলাং,
শস্যশ্যামলাং, মাতরং।"

মহেন্দ্র গীত শুনিয়া কিছু বিস্মিত হইল, কিছু বুঝিতে পারিল না—সুজলা সুফলা মলয়জশীতলা শস্য-শ্যামলা মাতা কে, তা ত বুঝিতে পারিল না—জিজ্ঞাসা করিল "মাতা কে?"

উত্তর না করিয়া ভবানন্দ গাইতে লাগিলেন।

"শুভ্র-জ্যোৎস্না-পুলকিত-যামিনীং—
ফুল্ল-কুসুমিত-দ্রুমদল-শোভিনীং
সুহাসিনীং সুমধুরভাষিণীং
সুখদাং বরদাং মাতরং।

মহেন্দ্র বলিল, "এ ত দেশ, এ ত মা নয়—"

ভবানন্দ বলিল, "আমরা অন্য মা মানি না—"জননী জন্মভূমিশ্চ স্বর্গাদপি গরীয়সী।" আমরা বলি, জন্মভূমিই জননী; আমাদের মা নাই, বাপ নাই, ভাই নাই, বন্ধু নাই,—স্ত্রী নাই, পুত্র নাই, ঘর নাই, বাড়ী নাই, আমাদের আছে কেবল সেই সুজলা সুফলা মলয়জশীতলা, শস্যশ্যামলা,—"

তখন খুসি হইয়া মহেন্দ্র বলিল, তবে আবার গাও।

ভবানন্দ আবার গাইল:—

"বন্দে মাতরং
সুজলাং সুফলাং, মলয়জশীতলাং,
শস্যশ্যামলাং, মাতরং।

শুভ্র-জ্যোৎস্না-পুলকিত-যামিনীং
ফুল্লকুসুমিত-দ্রুমদল-শোভিনীং
সুহাসিনীং সুমধুরভাষিণীং
সুখদাং বরদাং মাতরং।

সপ্তকোটী-কণ্ঠ-কলকলনিনাদ-করালে
দ্বিসপ্তকোটীভুজৈর্ধৃতখরকরবালে
কেবলে মা তুমি অবলে
বহুবলধারিণীং নমামি তারিণীং
রিপুদলবারিণীং মাতরং।"

তুমি বিদ্যা তুমি ধর্ম্ম
তুমি হৃদি তুমি মর্ম্ম
ত্বং হি প্রাণাঃ শরীরে।

* ১ ×১ ০

*ঈষার—ওজস্বিনী ভাল ব্যাখ্যা—বন্দে মাতরং ইত্যাদি।

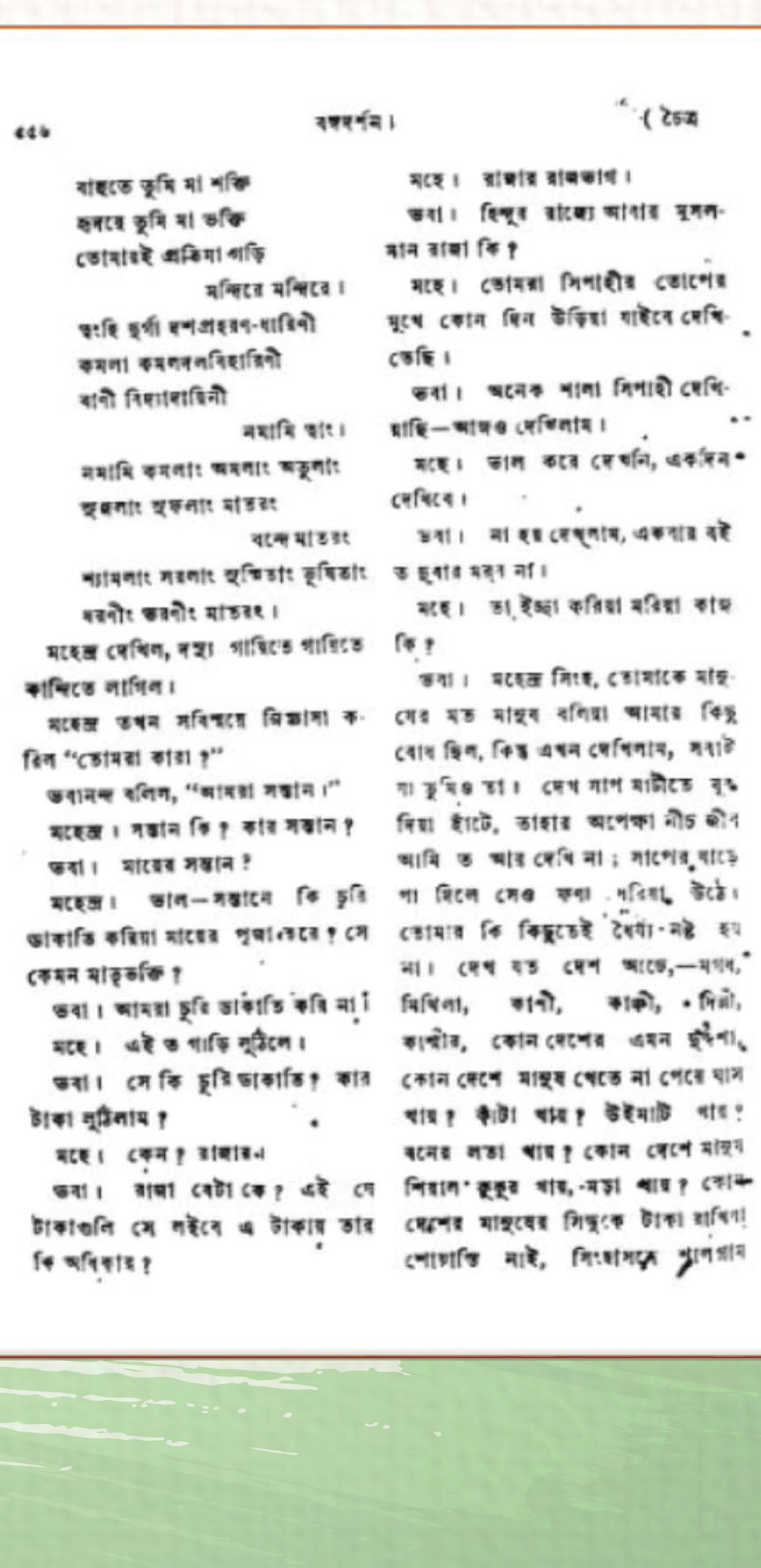

৫৫৬ বঙ্গদর্শন। [চৈত্র

বাহুতে তুমি মা শক্তি
হৃদয়ে তুমি মা ভক্তি
তোমারই প্রতিমা গড়ি
মন্দিরে মন্দিরে।
ত্বং হি দুর্গা দশপ্রহরণ-ধারিণী
কমলা কমলদলবিহারিণী
বাণী বিদ্যাদায়িনী
নমামি ত্বাং।
নমামি কমলাং অমলাং অতুলাং
সুজলাং সুফলাং মাতরং
বন্দে মাতরং
শ্যামলাং সরলাং সুস্মিতাং ভূষিতাং
ধরণীং ভরণীং মাতরং।

মহেন্দ্র দেখিল, দস্যু গাহিতে গাহিতে কাঁদিতে লাগিল।

মহেন্দ্র তখন সবিস্ময়ে জিজ্ঞাসা করিল "তোমরা কারা?"

ভবানন্দ বলিল, "আমরা সন্তান।"

মহেন্দ্র। সন্তান কি? কার সন্তান?

ভবা। মায়ের সন্তান?

মহেন্দ্র। ভাল—সন্তানে কি চুরি ডাকাতি করিয়া মায়ের পূজা করে? সে কেমন মাতৃভক্তি?

ভবা। আমরা চুরি ডাকাতি করি না।

মহে। এই ত গাড়ি লুটিলে।

ভবা। সে কি চুরি ডাকাতি? কার টাকা লুটিলাম?

মহে। কেন? রাজার।

ভবা। রাজা বেটা কে? এই যে টাকাগুলি সে লইবে এ টাকায় তার কি অধিকার?

মহে। রাজার রাজভাগ।

ভবা। হিন্দুর রাজ্যে আবার মুসলমান রাজা কি?

মহে। তোমরা সিপাহীর তোপের মুখে কোন দিন উড়িয়া যাইবে দেখিতেছি।

ভবা। অনেক শালা সিপাহী দেখিয়াছি—আজও দেখিলাম।

মহে। ভাল করে দেখনি, একদিন দেখিবে।

ভবা। যা হয় দেখা যাবে, একবার বই ত দুবার মরব না।

মহে। তা ইচ্ছা করিয়া মরিয়া কাজ কি?

ভবা। মহেন্দ্র সিংহ, তোমাকে মানুষের মত মানুষ বলিয়া আমার কিছু বোধ ছিল, কিন্তু এখন দেখিলাম, সবাই যা তুমিও তা। দেখ সাপ মাটীতে বুক দিয়া হাঁটে, তাহার অপেক্ষা নীচ জীব আমি ত আর দেখি না; সাপের ঘাড়ে পা দিলে সেও ফণা ধরিয়া উঠে। তোমার কি কিছুতেই ধৈর্য্য নষ্ট হয় না। দেখ যত দেশ আছে,—মগধ, মিথিলা, কাশী, কাঞ্চী, দিল্লী, কাশ্মীর, কোন দেশের এমন দুর্দ্দশা, কোন দেশে মানুষ খেতে না পেয়ে ঘাস খায়? কাঁটা খায়? উইমাটি খায়? বনের লতা খায়? কোন দেশে মানুষ শিয়াল কুকুর খায়, মড়া খায়? কোন দেশের মানুষের সিন্দুকে টাকা রাখিয়া শোয়াস্তি নাই, সিংহাসনে পাপগ্রাস

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

मार्च 1876:
नैहाटी स्थित बंकिम चंद्र के पैतृक घर की यह मेज उस भविष्यवाणी की गवाह है जब उन्होंने कहा था...



...कि वंदे मातरम् गीत का वास्तविक महत्त्व समय के साथ ही पता चलेगा।

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE

सत्यमेव जयते



1876 और 1884 के बीच, वे हुगली के उप-विभागीय अधिकारी थे, जहाँ उन्होंने नदी किनारे एक साधारण-सा घर खरीदा था। अब वंदे मातरम् भवन के नाम से प्रसिद्ध इस घर से ही उन्होंने अपनी सबसे प्रसिद्ध साहित्यिक कृतियाँ रचीं, जिनमें रजनी, राजसिंह, आनंदमठ, देवी चौधुरानी शामिल हैं।



संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का बारहवाँ अधिवेशन दिसंबर 1896 में कलकत्ता के बीडन स्क्वायर में आयोजित हुआ था

बॉम्बे के रहीमतुल्ला मोहम्मद सयानी की अध्यक्षता में आयोजित इस अधिवेशन में ब्रिटिश भारत के प्रत्येक प्रांत से लगभग 1,500 प्रतिनिधियों और लगभग 3,000 आगंतुकों ने भाग लिया।

इस अधिवेशन में प्रमुख रूप से उपस्थित लोगों में सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, आनंदमोहन बोस, दिनशॉ वाचा, फिरोजशाह मेहता, गोपाल कृष्ण गोखले और एम.जी. रानाडे शामिल थे, जो कांग्रेस के उदारवादी धड़े का प्रतिनिधित्व करते थे।



सुरेन्द्रनाथ बनर्जी



आनंदमोहन बोस



दिनशॉ वाचा



फिरोजशाह मेहता



गोपाल कृष्ण गोखले



एम.जी. रानाडे

लाला लाजपत राय, मदन मोहन मालवीय और जी. सुब्रमण्यम अय्यर जैसी उभरती हस्तियां भी वहां उपस्थित थीं, जो स्वतंत्रता आंदोलन के भीतर शुरू हो रहे पीढ़ीगत बदलाव का संकेत था



लाला लाजपत राय



मदन मोहन मालवीय



जी. सुब्रमण्यम अय्यर



रवीन्द्रनाथ टैगोर



सरला देवी



द्विजेंद्रलाल रॉय

रवींद्रनाथ टैगोर, सरला देवी चौधुरानी और द्विजेंद्रलाल रॉय जैसे सांस्कृतिक दिग्गजों ने इस आयोजन को एक कलात्मक और भावनात्मक आयाम दिया।

मद्रास, बंबई, पंजाब, मध्य प्रांत, असम और संयुक्त प्रांत से आए आगंतुकों ने इस समारोह को निश्चित रूप से एक राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया।

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

1896: गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में वंदे मातरम् गाया और इसे राष्ट्रीय चेतना का हिस्सा बना दिया

वंदे मातरम् के रचयिता बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय का निधन 1894 में हुआ था। वंदे मातरम् 1890 के दशक के मध्य तक बंगाल के साहित्यिक और राष्ट्रवादी हलकों में उनकी अमर विरासत के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका था।

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय को बंगाल के नवजागरण के प्रतीक के रूप में स्मरण करने हेतु उनके द्वारा रचित इस गीत को गाने का निर्णय किया।

उस समय राष्ट्रीय आंदोलन को अपने सांस्कृतिक प्रतीकों की तलाश थी। अकाल और आर्थिक दोहन की बहसों के बाद 1890 का दशक राष्ट्रवादी भावना के उभार का काल था।

बंगाल की सांस्कृतिक चेतना के प्रमुख स्वर के रूप में टैगोर ने राष्ट्रीय जागरण में कलात्मक योगदान देना चाहा। वंदे मातरम् को संगीतबद्ध कर स्वयं गा कर उन्होंने देशभक्ति की भावनाओं को सौंदर्य और संवेदना से अभिव्यक्त करने का एक नया माध्यम दिया।



संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

‘वंदे मातरम्’ का उद्घोष स्वतंत्रता सेनानियों के लिए एक प्रेरक और एकजुट करने वाला प्रतीक बना, जिसमें मातृभूमि के प्रति भक्ति और औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध राजनीतिक प्रतिरोध, दोनों का संगम था

महर्षि अरबिंदो ने 16 अप्रैल 1907 को अपनी पत्रिका 'बंदेमातरम' में उल्लेख किया:

"बत्तीस वर्ष पहले बंकिम ने अपना महान गीत लिखा था, और बहुत कम लोगों ने सुना था; लेकिन लंबे भ्रम से अचानक जागृति के एक क्षण में, बंगाल के लोगों ने सत्य की खोज शुरू की और एक नियतिपूर्ण क्षण में किसी ने वंदे मातरम् गाया। मंत्र दिया जा चुका था और एक ही दिन में पूरी जनता ने देशभक्ति को अपने धर्म के रूप में स्वीकार कर लिया था। माँ प्रकट हो चुकी थीं।"

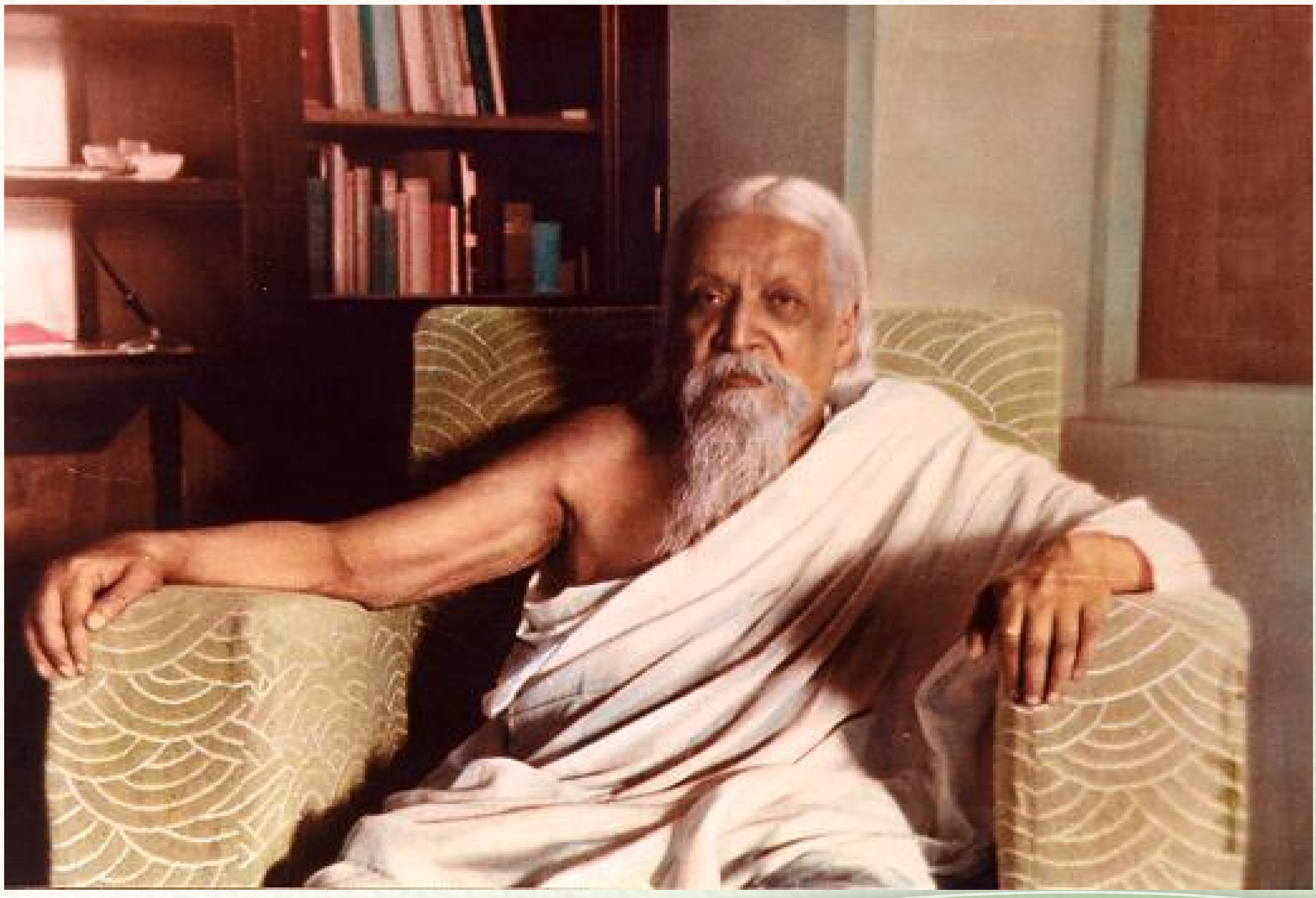

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

तमिलनाडु के राष्ट्रवादी कवि सी. सुब्रमण्य भारती ने वंदे मातरम् का पहली बार 1905 में और फिर 1908 में अनुवाद किया

2

1. வந்தே மாதரம

வந்தே மாதரம் என்போம் — எங்கள்
மாநிலத் தாயை வணங்குதும் என்போம்.

(வந்தே)

ஜாதி மதங்களை பாரோம்—உயர்
ஜன்மம் இத்தேசத்தில் எய்தினராயின்
வேதியராயினும் ஒன்றே — அன்றி
வேறு குலத்தினராயினும் ஒன்றே. 1

(வந்தே)

1. VANDĒMĀTARAM

Vandēmātaram enbōm — engaḷ
Mānila-t tāyai vaṇangudum enbōm.

(Vandē)

Jāti madangaḷai-p parōm — uyar
janmam it - tēsattil eydinarāyin
Vēdiyarāyinum onrē — anṛi
vēru kulattinar āyinum onṛē. I

(Vandē)

3

1. VANDEMATARAM

Let us chant 'Vandemataram'.
Let us pray to Mother India.

We care not for caste or creed;
be they Brahmins or not,
they are great, because they are sons of this blessed soil.

Let us chant 'Vandemataram'.
Let us pray to Mother India. 1



महाकवि भरतियार द्वारा वंदे मातरम् का पहला तमिल अनुवाद बंकिमचंद्र के मूल संस्कृत-बांग्ला पाठ का काफी हद तक शब्दशः और निष्ठापूर्वक किया गया रूप था। यह 1905 में बंगाल विभाजन के तुरंत बाद प्रकाशित हुआ, जब 'वंदे मातरम्' स्वतंत्रता संग्राम का उद्घोष बन चुका था। उस समय भरतियार का उद्देश्य तमिल पाठकों को इस गीत का अर्थ और उसकी पवित्र भावना से परिचित कराना था, ताकि वे माँ को भारतमाता के दिव्य और स्नेहमयी रूप में अनुभव कर सकें।

बाद में भरतियार ने 'वंदे मातरम्' का पुनः तमिल अनुवाद किया, जो अधिक सजीव और राष्ट्रवादी भावधारा से प्रेरित था। यह अनुवाद शाब्दिक न होकर व्याख्यात्मक था, जिसमें मातृत्व की उपासना से आगे बढ़कर स्वतंत्रता, जागरण और मातृभूमि के विचार पर बल दिया गया। स्वदेशी आंदोलन, बाल गंगाधर तिलक और आरंभिक संघर्षों से प्रेरित यह अनुवाद - रूपांतरण उनके आध्यात्मिक राष्ट्रवाद से राजनीतिक और सामाजिक राष्ट्रवाद की ओर परिवर्तन को दर्शाता है।

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

महर्षि अरबिंदो ने वंदे मातरम् गीत का दो बार अंग्रेजी में अनुवाद किया

महर्षि अरबिंदो ने 'वंदे मातरम्' का अंग्रेजी अनुवाद इस उद्देश्य से किया कि यह अधिक व्यापक पाठकवर्ग तक पहुँचे और उसके गहन आध्यात्मिक तथा देशभक्ति के अर्थ स्पष्ट हों, विशेष रूप से स्वतंत्रता आंदोलन के लिए इसे एक प्रेरक मंत्र के रूप में समझा जा सके।

उनका अनुवाद **"Mother, I Bow to Thee"** शीर्षक से प्रकाशित हुआ, जिसमें उन्होंने इस गीत को केवल एक राजनीतिक गीत नहीं, बल्कि स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत राष्ट्र के लिए एक पवित्र मंत्र के रूप में प्रस्तुत किया।

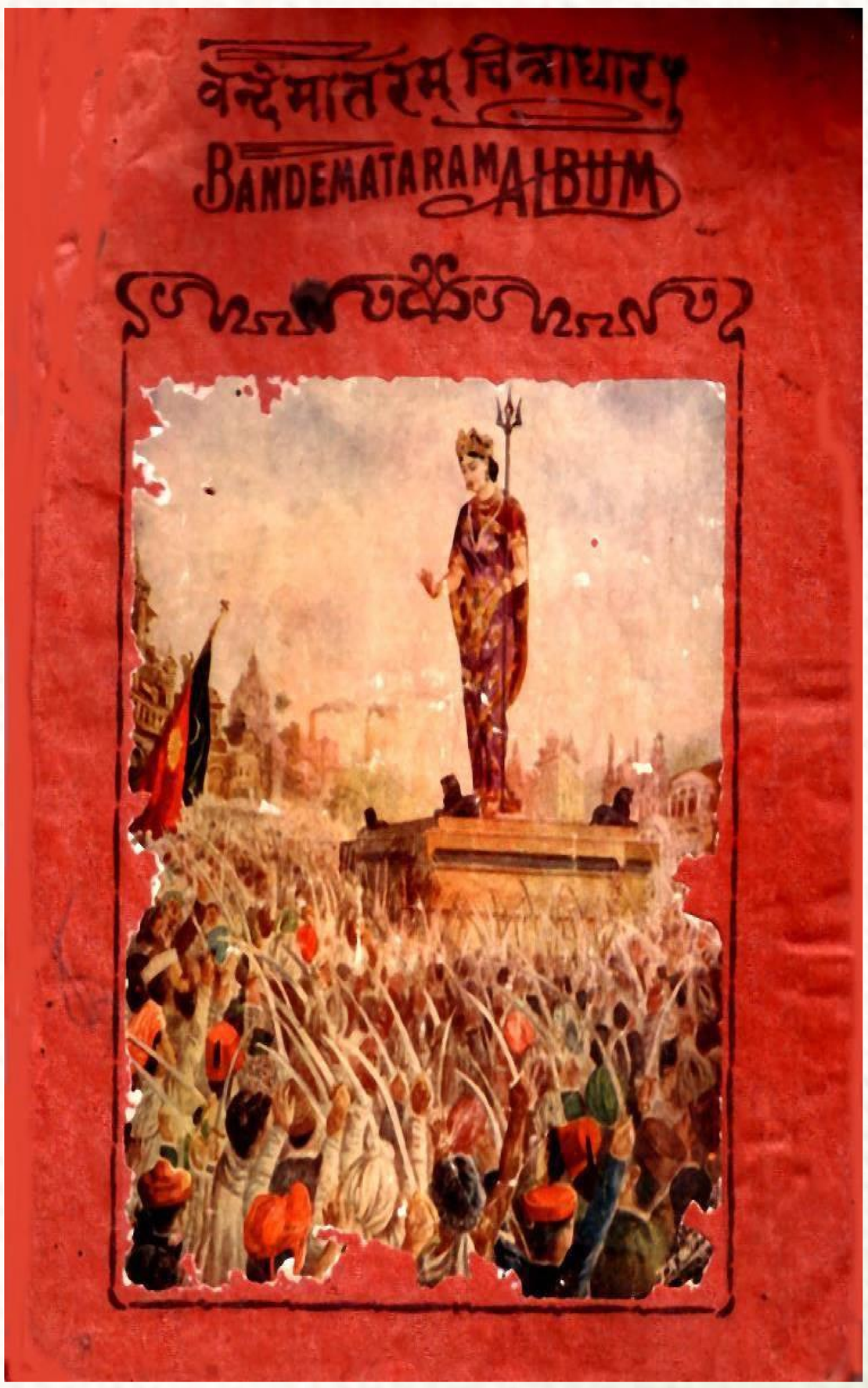

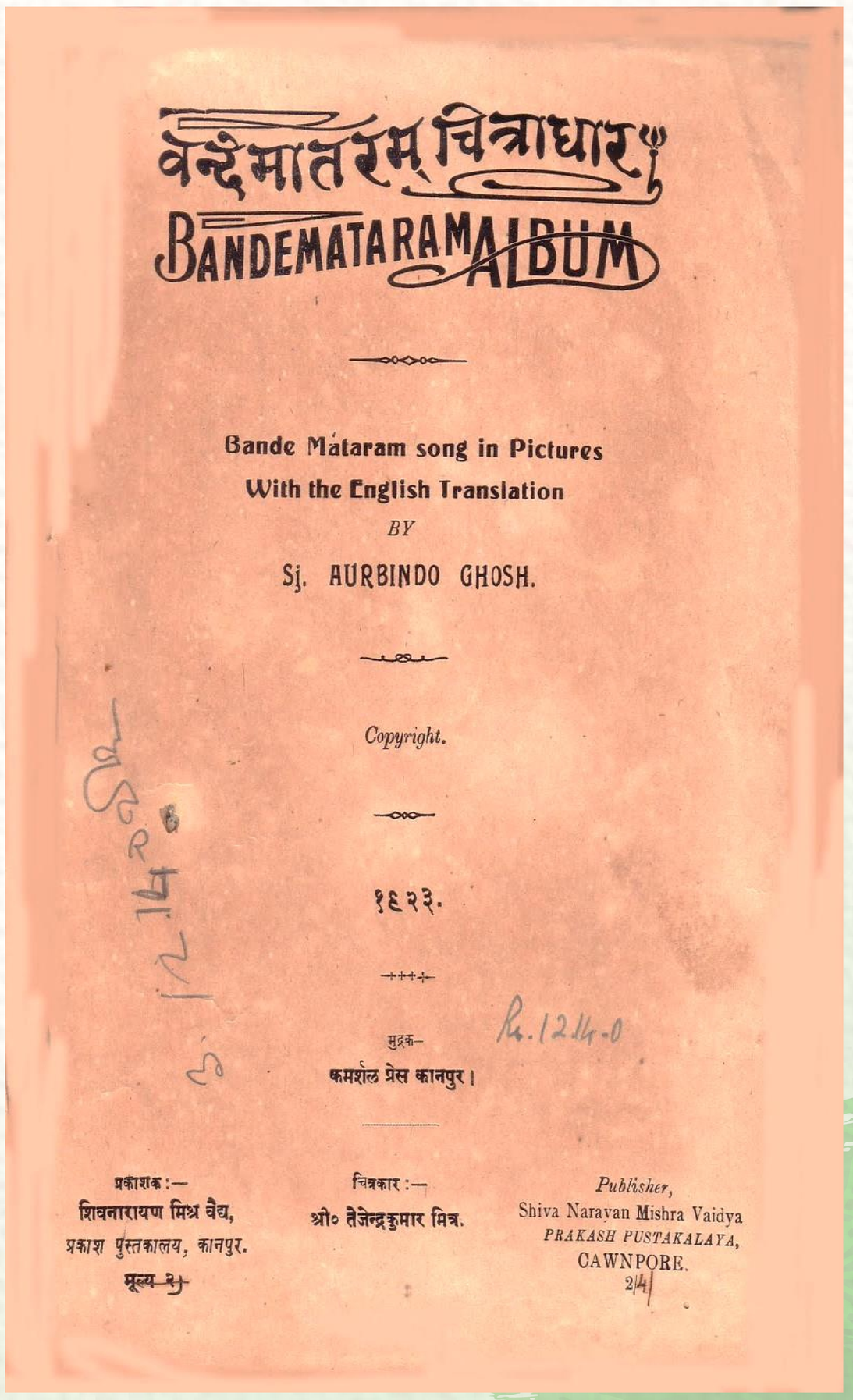

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

1923 में बनाई गई वंदे मातरम् की चित्रकारिता





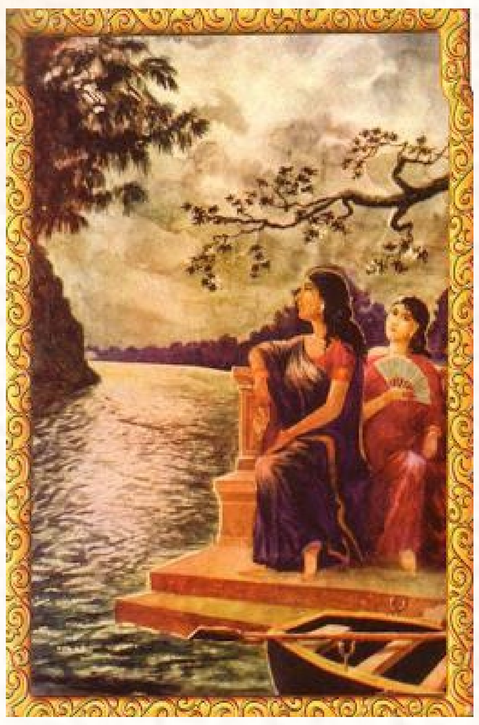



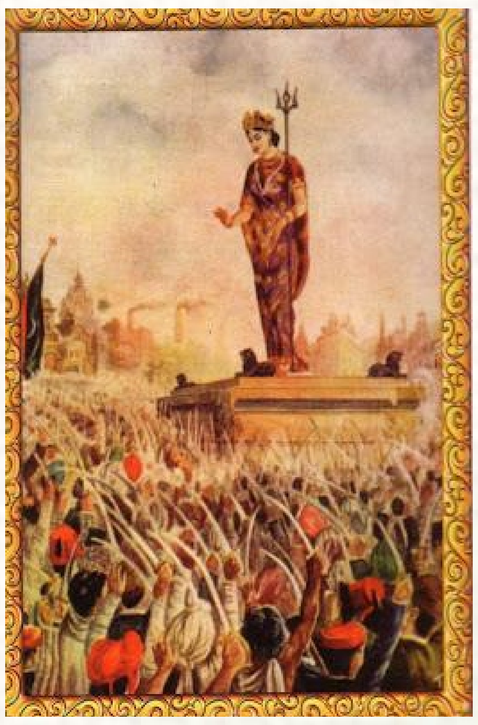





संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

वंदे मातरम् की असंख्य धुनें और संगीत रचनाएँ हमारी समृद्ध और विविध संगीत परंपरा का अभिन्न हिस्सा हैं

स्रोतों से ज्ञात होता है कि वंदे मातरम् की प्रारंभिक धुनों में से एक विष्णुपुर घराने के प्रसिद्ध ध्रुपद आचार्य जदुनाथ भट्टाचार्य ने राग काफ़ी में त्रिताल पर तैयार की थी।

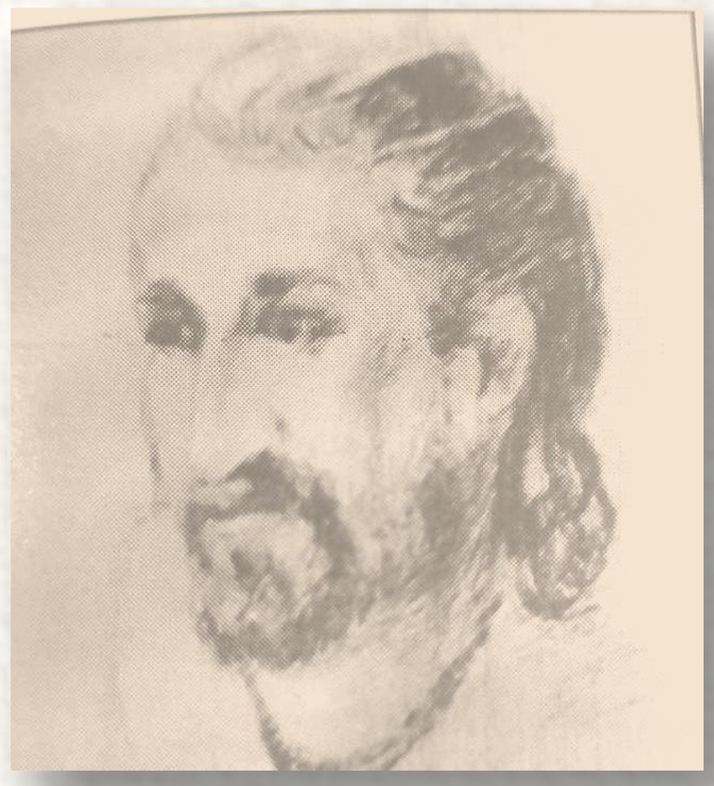

1880 के दशक के मध्य में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने इसे राग देश में कव्वाली ताल पर संगीतबद्ध किया। यह धुन बंकिमचंद्र को पसंद आई और *आनंदमठ* के तीसरे संस्करण (1886) के परिशिष्ट में प्रकाशित की गई।

इसके बाद वंदे मातरम् एक सशक्त जनगीत के रूप में उभरा और 1900 के दशक की शुरुआत में आंदोलन और विरोध का स्वर बन गया।

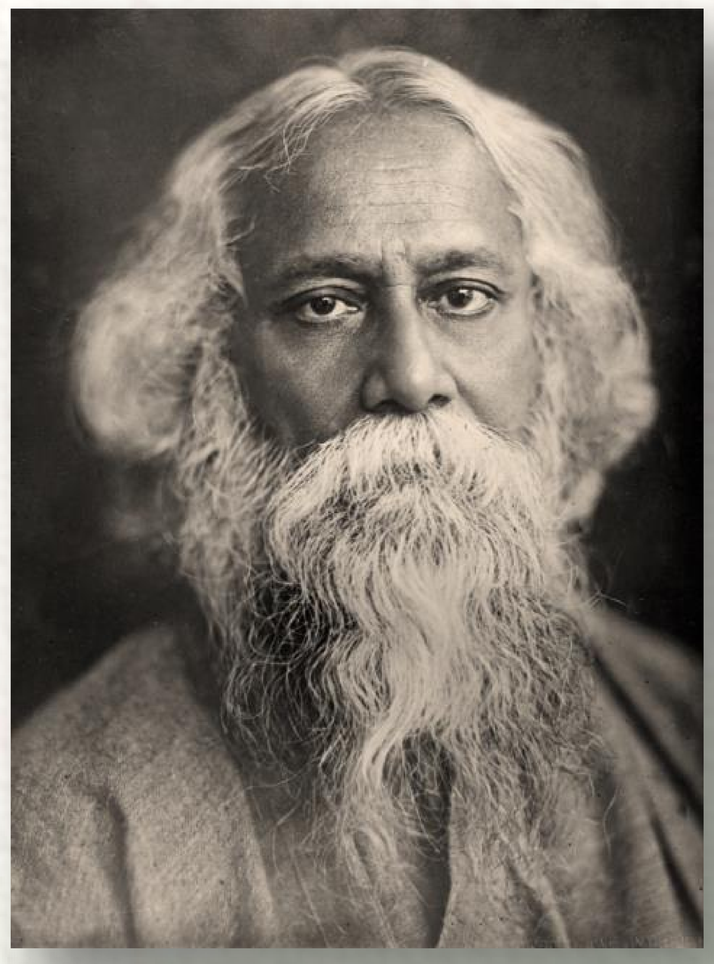

26 अक्टूबर 1937 को पंडित नेहरू को लिखे एक पत्र में गुरुदेव ने उल्लेख किया कि उन्हें यह सौभाग्य प्राप्त हुआ था कि बंकिमचंद्र के जीवनकाल में उन्होंने गीत के प्रथम पद को स्वरबद्ध किया और कलकत्ता कांग्रेस में इसे प्रस्तुत किया।

उसी समय के दौरान, हेमेंद्र मोहन बोस ने अपनी निजी रिकॉर्ड कंपनी एच. बोस' रिकॉर्ड्स के माध्यम से स्वदेशी आंदोलन के दौरान राष्ट्रवादी गीतों और भाषणों का निर्माण और प्रसार किया





इन रिकॉर्डों में वंदे मातरम् का एक शुरुआती व्यावसायिक संस्करण भी सम्मिलित था। एच. बोस की कार्यशाला के अधिकांश उपकरण और रिकॉर्ड स्वदेशी आंदोलन के दौरान औपनिवेशिक शासन द्वारा चलाए गए राजद्रोह अभियानों में जब्त या नष्ट कर दिए गए, जिसके कारण मूल प्रतियाँ बहुत कम बच पाईं।

फिर भी, रवींद्रनाथ टैगोर की आवाज़ में वंदे मातरम् का एक छोटा अंश आज भी बचा हुआ माना जाता है। टैगोर के स्वर का यह अंश उनके उपलब्ध सबसे प्राचीन ध्वनि रिकॉर्डों में से एक माना जाता है।

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

वंदे मातरम् की पहली रिकॉर्डिंग, राष्ट्रीय रिकॉर्ड संख्या 463 (10 इंच रिकॉर्ड - 1905, इंग्लैंड)



वंदे मातरम् की पहली रिकॉर्डिंग कोलकाता में श्री स्टीवन कार्ल पोर्टर ने निकोल लेबल के लिए की, जिसे श्री नारायण चंद्र मुखर्जी ने गाया था।

यह रिकॉर्ड लंदन में एडिसन बेल कंपनी द्वारा तैयार किए गए डिस्कों पर प्रेस किया गया और "नेशनल रिकॉर्ड" लेबल के तहत **"Bande Mataram Sujalam Sufalam"** शीर्षक से एक बांग्ला गीत के रूप में जारी किया गया।

विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि इस लेबल पर यूनियन जैक और रॉयल स्टैंडर्ड के झंडे अंकित थे- जो भारत के स्वतंत्रता गीत के इस प्रारंभिक रिकॉर्डिंग पर एक गहरी और मार्मिक विडंबना प्रस्तुत करते हैं।

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

ग्रामोफोन रिकॉर्ड्स पर लिखे शीर्षकों से पता चलता है कि स्वतंत्रता से पहले वंदे मातरम् को भारत का राष्ट्रीय गान माना जाता था।







Centre for Gramophone Studies

समय के साथ, वंदे मातरम् को व्यापक मान्यता मिली और यह भारत के स्वतंत्रता संग्राम के सबसे शक्तिशाली प्रतीकों में से एक बन गया।

जैसे-जैसे यह गीत जनसभाओं, छात्र आंदोलनों और राजनीतिक सभाओं में फैला, इसने सभी वर्गों के लोगों में भक्ति, साहस और एकता की भावनाएँ जगाईं।

इसका प्रभाव इतना गहरा था कि स्वतंत्रता सेनानियों ने देशभक्ति की अपनी दृश्य और प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियों में इस नारे को शामिल करना शुरू कर दिया।

वंदे मातरम् राष्ट्रीय ध्वज के कई प्रारंभिक संस्करणों पर प्रमुखता से दिखाई दिया, प्रत्येक डिज़ाइन स्वतंत्रता के लिए तरस रहे लोगों की आकांक्षाओं और कल्पना को दर्शाता था।

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

1905 में सिस्टर निवेदिता ने वज्र ध्वज का डिजाइन तैयार किया, जिस पर बांग्ला में 'बंदे मातरम्' लिखा हुआ था



1904 में रवींद्रनाथ टैगोर, जगदीश चंद्र बोस, द स्टेट्समैन के संपादक आर्थर मूर और इतिहासकार जदुनाथ सरकार के साथ बोधगया की यात्रा के दौरान सिस्टर निवेदिता ने पहली बार वज्र प्रतीक देखा।

बाद में उन्होंने पाया कि वज्र का उल्लेख हिंदू पौराणिक कथाओं में देवताओं के अस्त्र के रूप में किया गया है, विशेष रूप से इंद्र और दुर्गा के शस्त्र के रूप में।

1905 में सिस्टर निवेदिता ने लाल पृष्ठभूमि पर वज्र का चित्र और उस पर बांग्ला में लिखा बंदे मातरम् अंकित करते हुए एक ध्वज तैयार किया। यह ध्वज बंगाल विभाजन के दौरान कई सभाओं और रैलियों में उपयोग हुआ और 1906 के कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में भी प्रदर्शित किया गया।

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

1906 में बंगाल विभाजन की पहली वर्षगांठ पर सर सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने एक तिरंगा ध्वज फहराया



7 अगस्त 1906 को पारसी बागान (अब गिरीश पार्क), कलकत्ता में भारत का पहला अखिल भारतीय ध्वज फहराया गया। इस ध्वज में तीन पट्टियाँ थीं - ऊपर हरे रंग की, बीच में पीली और नीचे लाल।

पीली पट्टी के मध्य में देवनागरी लिपि में वंदे मातरम् लिखा था, जबकि लाल पट्टी के दोनों सिरों पर सूर्य और अर्धचंद्र के साथ एक सितारा अंकित था।

ऊपरी हरे पट्टे पर आठ पुष्पों के रूप में कमल की पंखुड़ियाँ बनी थीं। यह ध्वज सचिंद्रनाथ बोस और सुकुमार मित्र ने गुप्त अनुशीलन समिति के स्वयंसेवकों की सहायता से तैयार किया था।

यह ध्वज इतना लोकप्रिय हुआ कि 1906 के कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में मंच पर लगाने के लिए यूनियन जैक के स्थान पर इसी का उपयोग किया गया।

कलकत्ता ध्वज, जिसे बंदे मातरम् ध्वज के नाम से भी जाना जाता है, उस समय कई रूपों में बनाया गया, और हर संस्करण पर वंदे मातरम् अंकित था







संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

‘बंदे मातरम्’: वह अंग्रेज़ी समाचारपत्र जिसकी शुरुआत बिपिनचंद्र पाल ने की, और बाद में जिसका संपादन श्री अरबिंदो ने संभाला, इसने भारतीय जनचेतना पर गहरा प्रभाव डाला

बिपिनचंद्र पाल ने 1906 में *बंदे मातरम्* नाम से एक दैनिक समाचारपत्र आरंभ किया। इसके पहले से ही वे अपने साप्ताहिक पत्र में लंबे समय से आत्मनिर्भरता और असहयोग की नीति का प्रचार करते आ रहे थे।



उन्होंने महर्षि अरबिंदो को इस कार्य में शामिल होने का आमंत्रण दिया, जिसे महर्षि अरबिंदो ने स्वीकार किया क्योंकि यह उनके क्रांतिकारी उद्देश्य के लिए आवश्यक जनजागरण का माध्यम बन सकता था।



बंदे मातरम् ने अल्पकाल में ही असाधारण प्रभाव डाला और भारतीय जनमत को दिशा देने वाले इतिहास के विशिष्ट समाचारपत्रों में स्थान पाया।

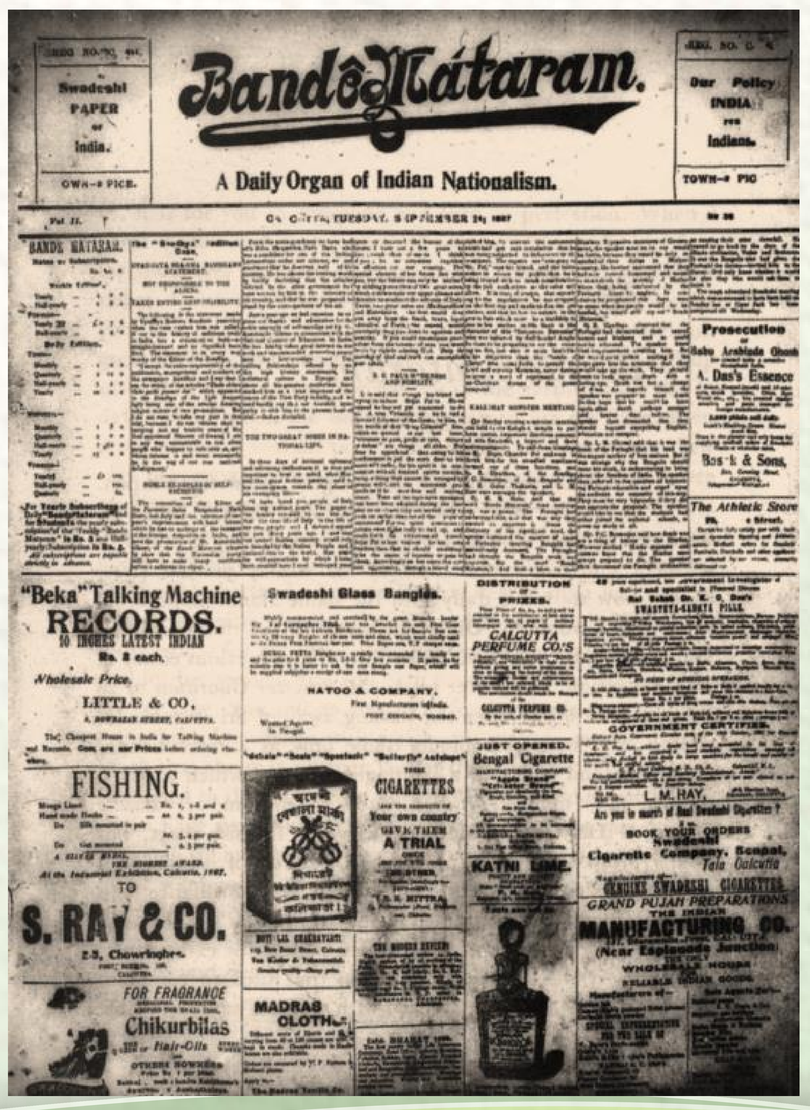

बौद्धिक आनंद

“मैं अपने मित्रों और प्रत्येक परिचित से आपके उत्कृष्ट पत्र की अनुशंसा करने का कोई अवसर नहीं छोड़ता। मेरे लिए यह प्रायः एक बौद्धिक आनंद का अवसर प्रदान करता है, और मेरी हार्दिक इच्छा है कि इसकी उपयोगिता को कभी आघात न पहुँचे। यह राष्ट्र के लिए एक अद्भुत सेवा कर रहा है। इसकी दीर्घायु के लिए मेरी सच्ची प्रार्थना है।” –
लाजपत राय ने लिखा (4 मई 1907 को, अपने निर्वासन से ठीक पाँच दिन पहले)

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

मैडम भीकाजी कामा ने 22 अगस्त 1907 को जर्मनी के स्टटगार्ट में विदेशी भूमि पर पहली बार भारतीय ध्वज फहराया



इस ऐतिहासिक घटना ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को अंतरराष्ट्रीय मंच पर पहचान दिलाई। मैडम कामा द्वारा फहराया गया ध्वज तिरंगा था, जिस पर वंदे मातरम् अंकित था। यह ध्वज मैडम भीकाजी कामा और श्यामजी कृष्ण द्वारा डिजाइन किया गया था।

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

'बंदे मातरम् संप्रदाय' की स्थापना अक्टूबर 1905 में उत्तर कलकत्ता में की गई थी।

इस संगठन ने शीघ्र ही अनेक युवाओं को आकर्षित किया, जिनका उद्देश्य देशवासियों के बीच बंदे मातरम् की भावना का प्रसार करना था।

प्रत्येक रविवार को इसके सदस्य सड़कों पर जुलूस निकालते, बंद मातरम् गाते हुए लोगों से स्वैच्छिक योगदान स्वीकार करते थे, यद्यपि निधि एकत्र करना उनका उद्देश्य नहीं था।

कहा जाता है कि एक अवसर पर रवींद्रनाथ टैगोर ने भी इस जुलूस में भाग लिया था।

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

1905 के बंगाल विभाजन के विरोध में कोलकाता के विद्यार्थियों और नागरिकों ने बड़ी संख्या में भाग लेकर व्यापक प्रदर्शन किया

आंदोलन को बलपूर्वक दबाने के लिए तत्कालीन बंगाल के मुख्य सचिव आर. डब्ल्यू. कार्लाइल ने अक्टूबर 1905 में एक परिपत्र जारी किया, जो बाद में कार्लाइल सर्कुलर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इस दमनात्मक आदेश के तहत लोगों, विशेषकर छात्रों, के बड़े समूहों में एकत्र होने और भाग लेने पर रोक लगा दी गई।

सभाओं और प्रदर्शनों सहित किसी भी प्रकार की सार्वजनिक सभा पर प्रतिबंध लगाया गया, यहाँ तक कि उस समय के जनआंदोलन का नारा बन चुका वंदे मातरम् का उच्चारण भी निषिद्ध कर दिया गया।

इसके विरोध में, नवंबर 1905 में रिपन कॉलेज (वर्तमान सुरेंद्रनाथ कॉलेज) के छात्र नेता सचिंद्र प्रसाद बोस ने एंटी-सर्कुलर सोसाइटी की स्थापना की।



संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

धीरे-धीरे वंदे मातरम् का गीत और नारा भारत के विभिन्न भाषाई और प्रांतीय आंदोलनों में असंतोष की अभिव्यक्ति का माध्यम बनते गए।

ब्रिटिश सरकार ने वंदे मातरम् गीत और नारे को देशद्रोही घोषित किया और इसे हिंसा तथा दमन के बल पर दबाने का प्रयास किया।

अप्रैल 1906 में श्री ए. रसूल की अध्यक्षता में आयोजित बंगाल प्रांतीय सम्मेलन (बरिशाल) में पुलिस ने प्रतिनिधियों और स्वयंसेवकों पर बेरहमी से लाठीचार्ज किया। उनके परिधान पर लगे वंदे मातरम् के बैज जबरन फाड़ दिए गए।

वंदे मातरम् का उद्घोष करने वाले कई प्रतिनिधियों को इतनी निर्ममता से पीटा गया कि वे अचेत होकर गिर पड़े।

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

वंदे मातरम् का पहला हिन्दी अनुवाद

वन्दे मातरम्।

पानी की कुछ कमी नहीं है, हरियाली लहराती है।

फल औ फूल बहुत होते हैं, रम्य रात छवि छाती है।

मलयानिल मृदु मृदु बहती है, शीलतला अधिकाती है

सुखदायिनि वरदायिनि तेरी, मूर्ति मुझे अति भाती है

वन्दे मातरम्।

तीस कोटि लोगों की कल कल सुनी जहां पर जाती है

उसकी दुगुन खड्ग-धारा की द्युति विकाश जहँ पाती है

तिस पर भी "तू अबला है" यह बात व्यथा उपजाती है

हे तारिनि! हे बहुबल-धारिनि! रिपु तू काट गिराती है

वन्दे मातरम्।

तूही धर्म्म, कर्म्म भी तूही, तूही विद्यावानी है।

तूही हृदय, प्राण भी तूही, तूही गुण-गण खानी है।।

बाहु-शक्ति तूही मम, तेरी भक्ति महा मन मानी है।

प्रति घट, प्रति मन्दिर के भीतर तूही सदा समानी है।।

वन्दे मातरम्।

हे दुर्गे! दस भुजा तुम्हारी दुर्गति-नाश निशानी है।

हे कमले! हे अमले! अचले! तू सब सुख की खानी है।।

नहीं एक भी भरतखंड में ऐसा पापी प्रानी है।

कहै न जो नित, "यही हमारी महा-महिम महरानी है"

वन्दे मातरम्।

- श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी
सरस्वती पत्रिका, जनवरी, १९०६ अंक

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

राजमुंदरी ट्रेनिंग कॉलेज में, बिपिन चंद्र पाल से प्रेरित विद्यार्थियों ने वंदे मातरम् के बैज पहनना और एक-दूसरे का अभिवादन “वंदे मातरम्” कहकर करना शुरू किया



1907 में, बिपिन चंद्र पाल के आंध्र प्रदेश दौरे ने स्वराज, स्वदेशी और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार पर उनके प्रभावशाली भाषणों के माध्यम से गहरी राष्ट्रीय चेतना का संचार किया।

राजमुंदरी ट्रेनिंग कॉलेज में, पाल से प्रेरित विद्यार्थियों ने वंदे मातरम् के बैज पहनना और “वंदे मातरम्” कहकर एक-दूसरे का अभिवादन करना शुरू किया। कॉलेज के प्रिंसिपल मार्क्स हंटर ने इन गतिविधियों पर प्रतिबंध लगा दिया और पाल पर सरकार विरोधी विचार फैलाने का आरोप लगाया।

24 अप्रैल 1907 को गदिचेरला हरिसर्वोत्तम राव के नेतृत्व में विद्यार्थियों ने इस प्रतिबंध की अवहेलना की, परीक्षा चल रही होने के बावजूद हड़ताल की और “वंदे मातरम्” के नारे लगाए।

इसके प्रतिशोध में हंटर ने 139 छात्रों को निष्कासित कर दिया, कई पर जुर्माना लगाया और गदिचेरला को ब्लैकलिस्ट कर दिया। यह भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में छात्र प्रतिरोध के शुरुआती और उल्लेखनीय उदाहरणों में से एक बना।

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

वंदे मातरम्: वीरों की पुकार

"मेरी ईश्वर से बस एक ही प्रार्थना है - मैं उसी मातृभूमि की गोद में पुनः जन्म लूँ और उसी पवित्र उद्देश्य के लिए पुनः मृत्यु को प्राप्त करूँ, जब तक वह उद्देश्य पूर्ण न हो जाए, और मेरी मातृभूमि मानवता के कल्याण तथा परमात्मा की महिमा के लिए स्वतंत्र न हो जाए।
वंदे मातरम्!"

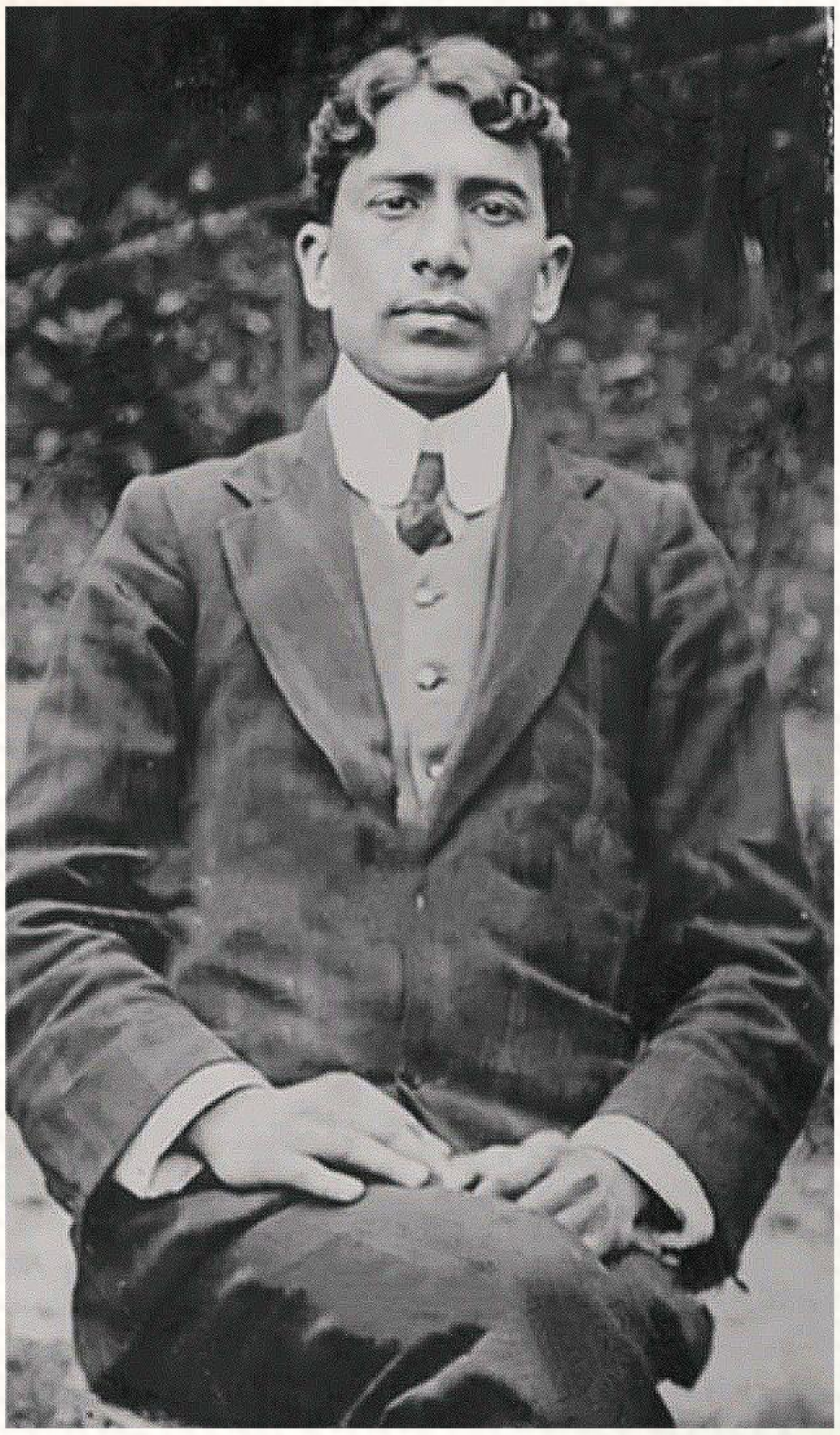

मदन लाल ढींगरा, फाँसी के फंदे पर चढ़ने से ठीक पहले (1909)

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE

सत्यमेव जयते

स्वतंत्रता से पहले के दौर की कई साहित्यिक रचनाएँ, जिनमें 'वंदे मातरम्' का उल्लेख और भारत माता की तस्वीर होती थी, ब्रिटिश सरकार द्वारा 'प्रतिबंधित' (Proscribed) श्रेणी में रखी गई थीं



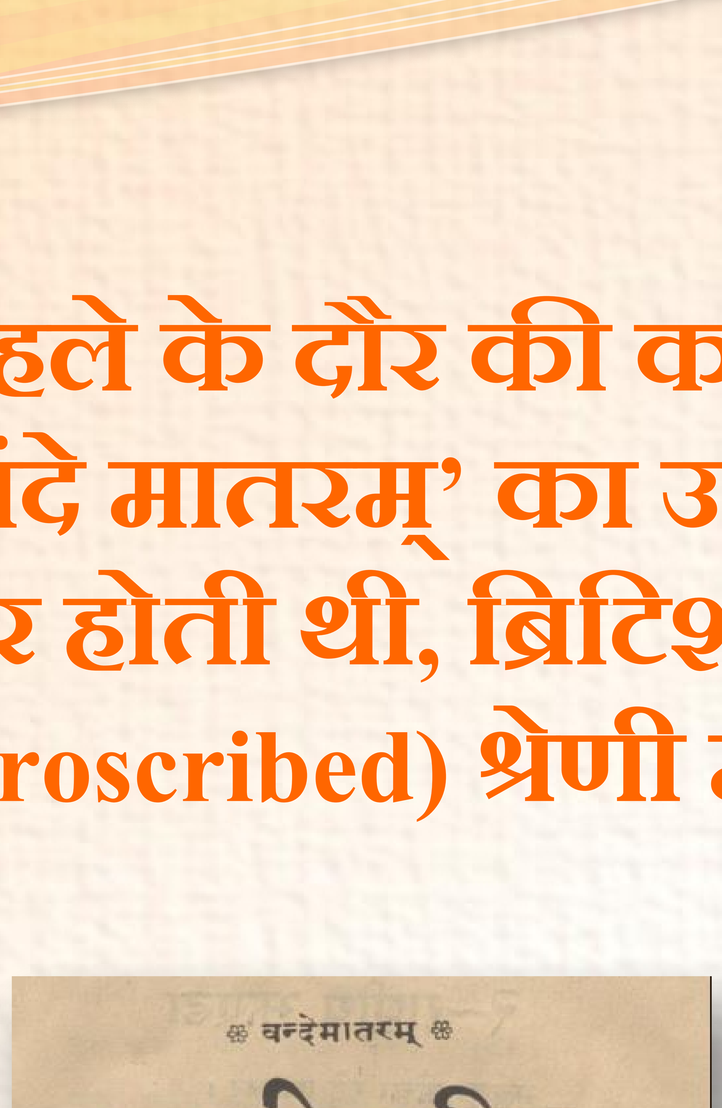

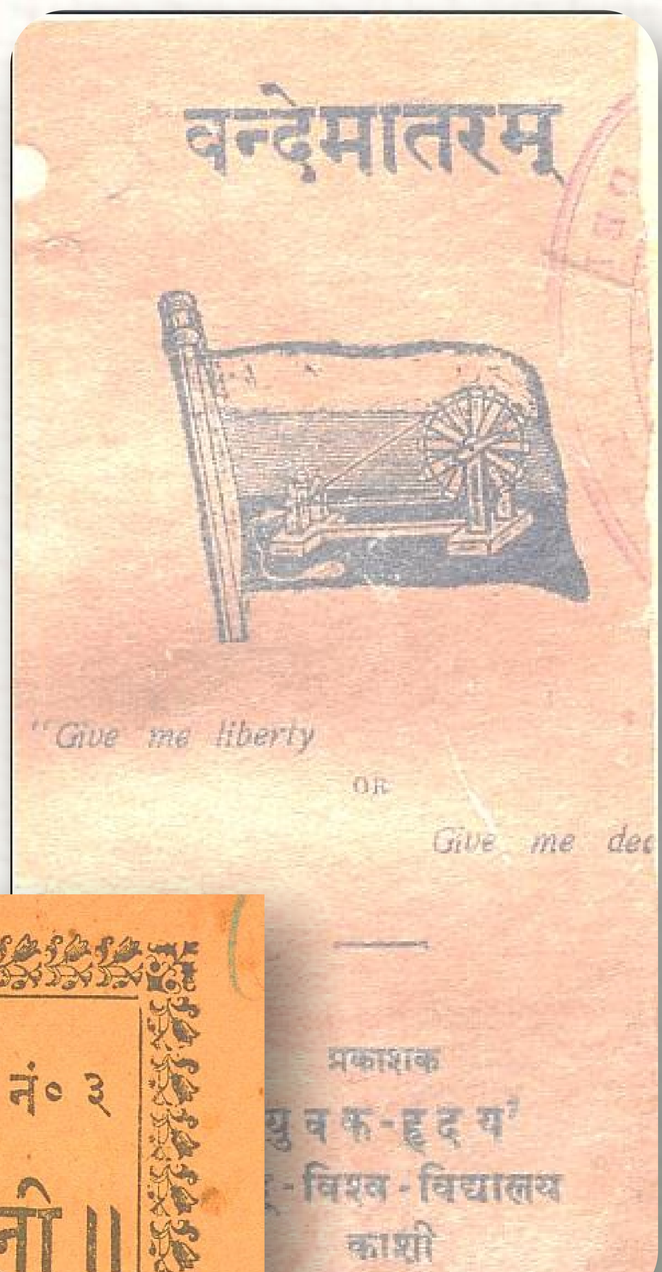

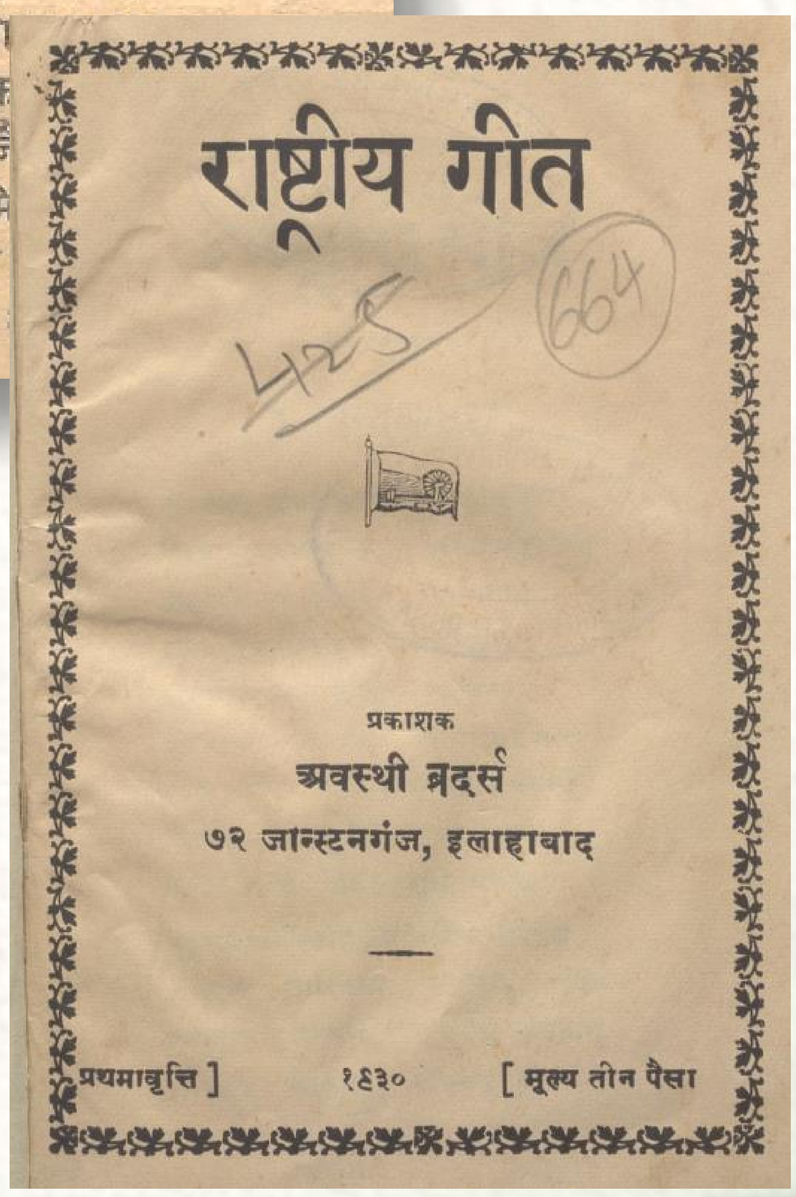

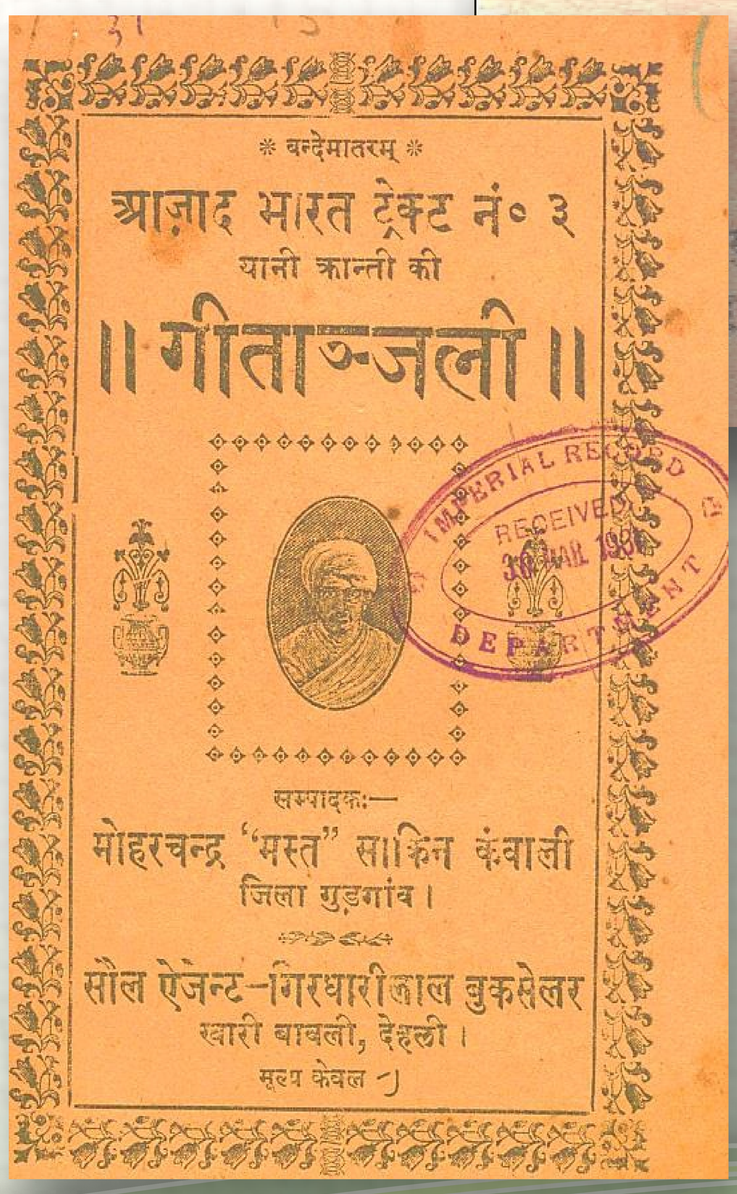

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

भारत के लिए तैयार की गई लॉर्ड बेडन पॉवेल की आधिकारिक Scouting Handbook के शुरुआती संस्करण में 'देशभक्ति' शीर्षक वाले अध्याय के अंतर्गत 'वंदे मातरम्' को शामिल किया गया था

I sent copy to Hdq
& rec'd also wire to L.D.
Bradbourne - wire H.S. please
put up the papers

10

HOME AR
File No .....
10. MAY 1937
Diary No 2980/37 PM

THE BOY SCOUTS ASSOCIATION,
25, BUCKINGHAM PALACE ROAD,
LONDON, S. W. 1.

18th April 1937.

? Which papers are in
P.M.-Secrs. Room
10/5

My dear Sir Henry,

I am most grateful to you for so kindly taking the trouble to write and tell me of the bloomer which has been made in "Scouting for Boys" in India. I had no idea that the song "Vande Mataram" contained such sentiments, and it was inserted in the book when this was edited by the Indian Headquarters.
I shall now be able to chaff them on their knowledge of India and at the same time to arrange that the offending item shall be taken out of the next edition.

Meantime let me say again how grateful I am to you for pointing out this error.

I need not say how closely we are watching political developments in India and how heartily we wish you a happy issue out of all your afflictions.

Yours sincerely,

Baden Powell

हालांकि वंदे मातरम् की बढ़ती लोकप्रियता के चलते लॉर्ड बेडन पॉवेल ने 18 अप्रैल 1937 को हेनरी क्रैक को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने ब्रिटिश सरकार से वंदे मातरम् पर आपत्ति दर्ज करने का सुझाव दिया।

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान 29 सितंबर 1942 को मातंगिनी हाज़रा ने 6000 से अधिक समर्थकों के साथ तमलुक पुलिस स्टेशन की ओर एक जुलूस का नेतृत्व किया



जैसे ही वह आगे बढ़ीं, पुलिस ने उन पर अंधाधुंध गोलियाँ चलानी शुरू कर दीं। गोली लगने के बावजूद उन्होंने रुकना मंजूर नहीं किया।

फायरिंग जारी रही, लेकिन वह डटी रहीं। उन्होंने ऊँची आवाज़ में 'वंदे मातरम्' का नारा लगाया।
गोलियाँ बरसती रहीं, फिर भी उन्होंने तिरंगा ऊँचा उठाए रखा और अंततः तिरंगे को थामे हुए वीरगति को प्राप्त हुईं।

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद 5 नवम्बर 1948 को संविधान सभा में सेठ गोविंद दास ने वंदे मातरम् के संबंध में निम्नलिखित वक्तव्य दिया



As far as the question of National Anthem is concerned, I would say that 'Vande Mataram' can be our National Anthem. The history of our struggle for independence is associated with Vande Mataram. If it be said that is tune is not fit for orchestrisation I would submit that this is a difficulty which can be overcome by experts in orchestral music. Lyrical songs of Mahakavi Soordas and Meerabai can be sung not only in one but in many tunes. It is therefore wrong to think that 'Vande Mataram' is not suited for orchestrisation. There is no person who has no respect in his heart for Rabindranath Tagore - the King among poets. The verse "Jana Mana Gana" was composed on the occasion of the visit of the late Emperor George the V to India in 1911. The poem offers greetings, not to Mother India, but to the late King Emperor. Every sentiment in it is in relation to the" Bharat Bhagia Vidhata" and who is meant is clear from the expression "victory to the Emperor" (Jai Rajeshwar). It is evident that in a Republic we cannot in our National Anthem offer any greetings to any 'Rajeshwar'. 'Vande Mataram' alone, therefore can be our National Anthem.

15 नवम्बर 1948 को संविधान सभा में भारत के संविधान के सामान्य सिद्धांतों पर चर्चा के दौरान प्रो. शिब्बन लाल सक्सेना ने एक दिलचस्प संशोधन प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने वंदे मातरम् को राष्ट्रीय गान के रूप में प्रस्तावित किया

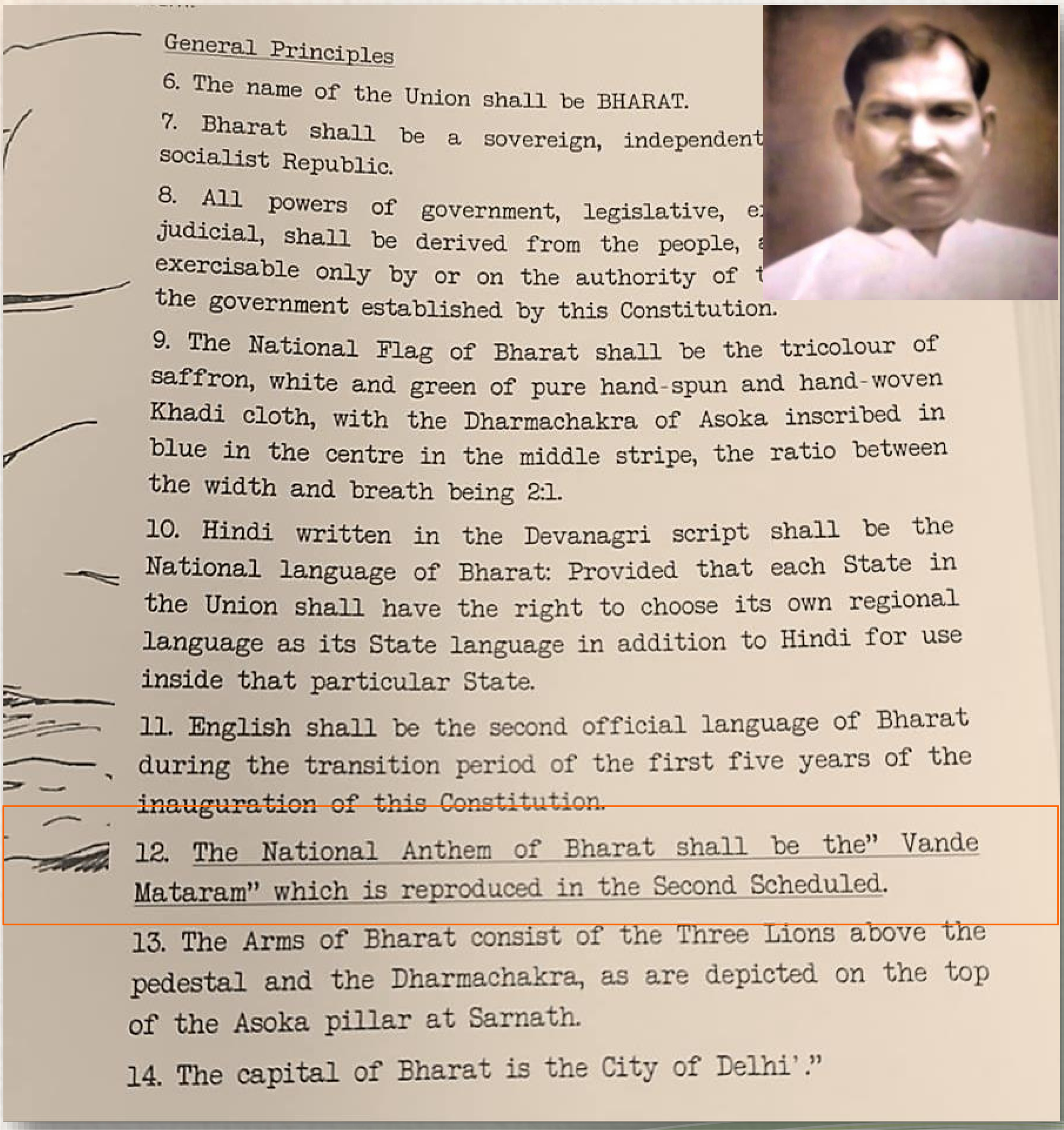

General Principles

6. The name of the Union shall be BHARAT.

7. Bharat shall be a sovereign, independent socialist Republic.

8. All powers of government, legislative, e judicial, shall be derived from the people, a exercisable only by or on the authority of t the government established by this Constitution.

9. The National Flag of Bharat shall be the tricolour of saffron, white and green of pure hand-spun and hand-woven Khadi cloth, with the Dharmachakra of Asoka inscribed in blue in the centre in the middle stripe, the ratio between the width and breath being 2:1.

10. Hindi written in the Devanagri script shall be the National language of Bharat: Provided that each State in the Union shall have the right to choose its own regional language as its State language in addition to Hindi for use inside that particular State.

11. English shall be the second official language of Bharat during the transition period of the first five years of the inauguration of this Constitution.

12. The National Anthem of Bharat shall be the" Vande Mataram" which is reproduced in the Second Scheduled.

13. The Arms of Bharat consist of the Three Lions above the pedestal and the Dharmachakra, as are depicted on the top of the Asoka pillar at Sarnath.

14. The capital of Bharat is the City of Delhi'."

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

24 जनवरी 1950 को संविधान सभा के अध्यक्ष के रूप में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने एक वक्तव्य दिया

इस सभा ने अभी एक प्रश्न पर विचार नहीं किया है। वह प्रश्न राष्ट्र-गान का प्रश्न है। एक समय यह विचार किया गया था कि इस विषय को सभा के समक्ष रखा जाये और वह एक प्रस्ताव द्वारा इसके सम्बन्ध में निर्णय करे। किन्तु अब यह समझा गया है कि राष्ट्र-गान के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव स्वीकार करके रस्मी तौर से निर्णय करने के स्थान पर मैं ही एक वक्तव्य दे दूं। इसलिये मैं यह वक्तव्य देता हूं।

जिस गान के शब्द तथा स्वर 'जन-गण-मन' के नाम से विख्यात हैं वह भारत का राष्ट्रगान है किन्तु उसके शब्दों में सरकार की आज्ञा से यथोचित अवसर पर हेर फेर किया जा सकता है। **'वंदे मातरम्' के गान का जिस का भारतीय स्वतंत्रता के संग्राम में ऐतिहासिक महत्व रहा है, 'जन, गण, मन' के समान ही सम्मान किया जायेगा और उसका पद उसके समान ही होगा** (हर्षध्वनि)। मुझे आशा है कि इससे सदस्यों को संतोष हो जायेगा।

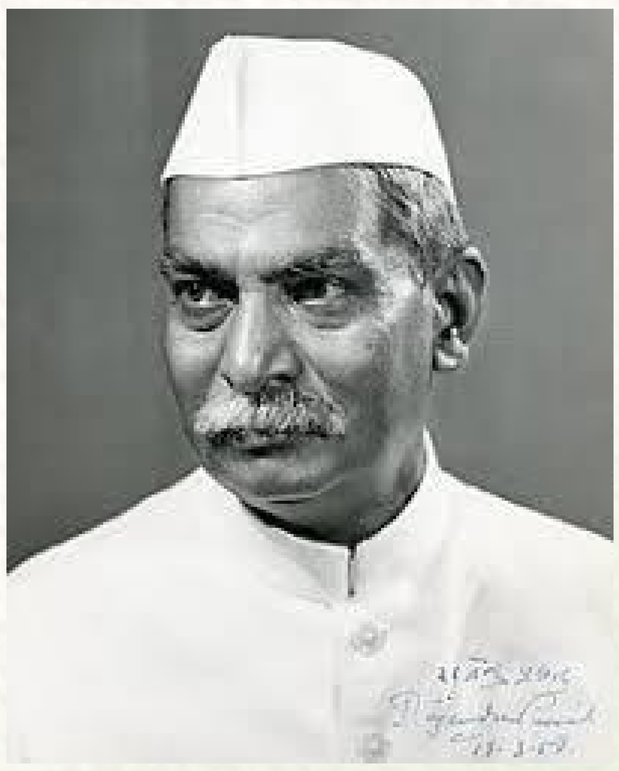

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

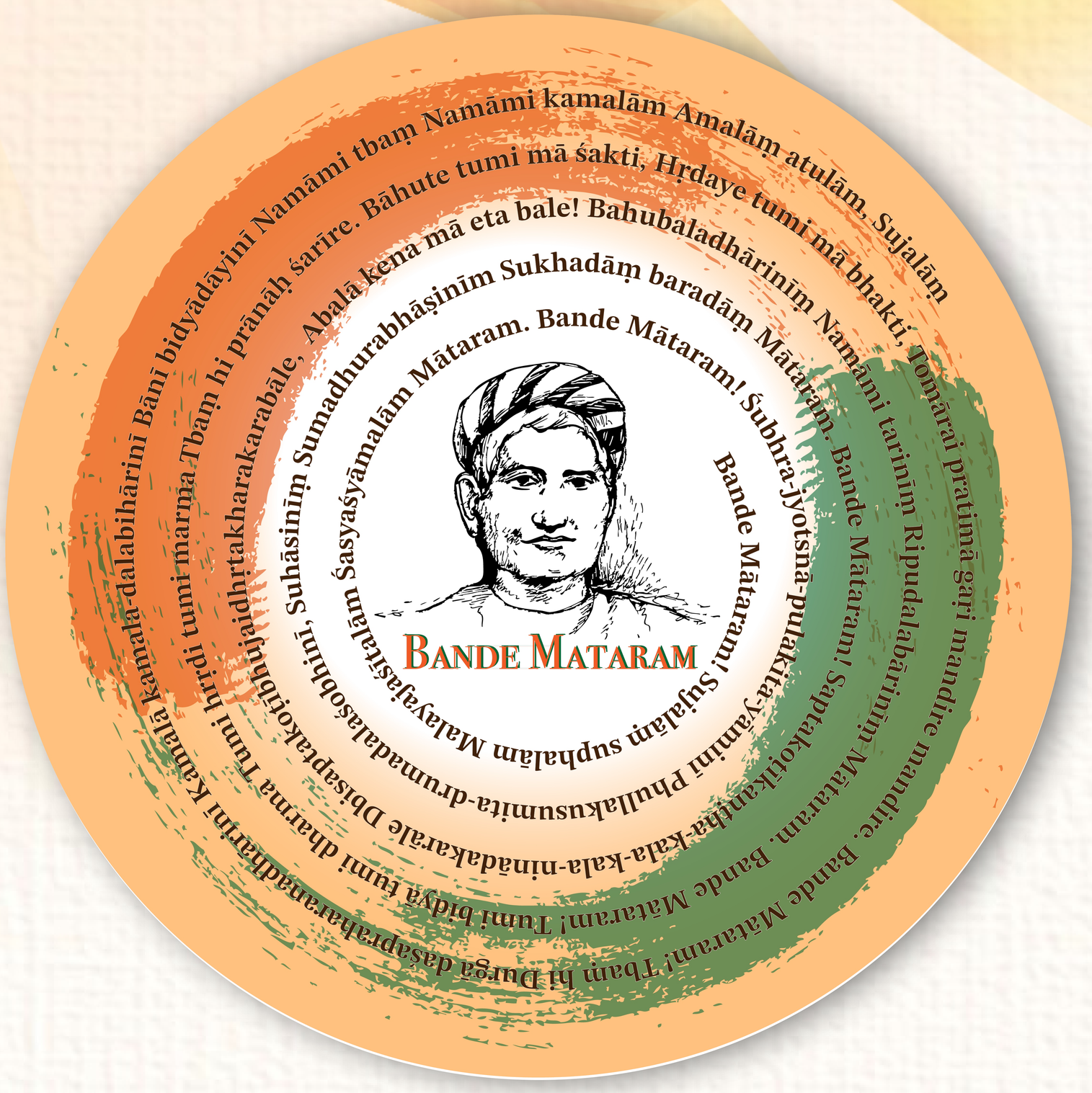

वंदे मातरम्

भारत के स्वतंत्रता संग्राम का आह्वान